

विचार बिन्दु

में ईश्वर से डरता हूँ और ईश्वर के बाद उससे डरता हूँ
जो ईश्वर से नहीं डरता। -शेख सदी

स्वतंत्रता दिवस पर लोकतंत्र के भविष्य की चिंता

हम भारत के लोग कल देश का 78वाँ स्वतंत्रता दिवस मनाएंगे। पिछले 77 सालों में देश ने प्रगति के अनेक सोपान चढ़े हैं। इन सोपानों पर हम सहज ही गर्व कर सकते हैं। तिजारत करने आए अंग्रेज, जो यहां के मालिक बन बैठे थे, जब वापस अपने वतन लौटे तब इस देश को कंगाल छोड़ गए थे। भारत ने अपने को फिर से बनाया। संविधान निर्माताओं ने न्याय और समता वाले समाज की रचना के वास्ते संसदीय लोकतंत्र वाले गणतंत्रिक राज्य की व्यवस्था दी। मगर तीन चौथाई सदी के बाद भी इस देश में लोकतंत्र की वैसी इमारत खड़ी नहीं हो पाई है जिसमें न्याय, समानता और आपसी प्रेम का घर बसा हो। कौंसिल विडंबना है कि इतने लंबे समय तक, जब लोकतंत्र की जड़ें गहरी जम जानी चाहिए थीं, उसके भविष्य की चिंता करनी पड़ रही है। अजीब बात यह है कि सबको अपने-अपने राजनीतिक विरोधियों से ही लोकतंत्र को खतरा नज़र आ रहा है। राज में आने की प्रतिस्पर्धा की राजनीति के लोग प्रेम और युद्ध में सब जायज के सिद्धांत पर चलते हुए नई डिजिटल तकनीकों के उपयोग से अपने-अपने कथाराम बना रहे हैं और आपसी दुनिया में प्रचार करके असली दुनिया में विभाजन रेखाएं खींच रहे हैं। लोकतान्त्रिक संस्थाओं को अयोग्य हाथों में सौंपना तथा लोकतंत्र की संविधानमूढ़त शक्तियों को अपनी व्याख्या के अनुसार काम में लेना अब सामान्य चलन बन गया है। लोक सेवा आयोगों के सदस्यों और विश्वविद्यालयों में कुलपतियों की नियुक्तियों तथा उनके कामकाज के हाल हम देख चुके हैं। लोकतंत्र का सर्वोच्च संस्था विधायिका में गंभीर चर्चाओं के स्थान पर हुड़दंग अधिक होता है। कार्यपालिका सामंती काल से चले आ रहे आक्रंद प्रशासक की दलदल में और गहरे धंसी चली जा रही है। मुकदमों के भारी बोझ तले दबी न्यायपालिका तुरंत सुनवाई के लिए किस पर मेहरबान होगी कोई नहीं जानता। रियासतों के एकीकरण के बाद सामंती शासन से लोकतान्त्रिक व्यवस्था में पूर्ण बदलाव की मंजिल अब भी दूर तक नज़र नहीं आती। वह इसलिये कि भारतीय समाज भौतिक रूप से भले ही आधुनिक हो गया हो, किन्तु वह शोषण, ऊंच-नीच और अधिनायकवाद के बोझ वाले सामंती सोच से मुक्त नहीं हो सका है। लोकतान्त्रिक राजनीति, जिसे सेवा का उद्यम होना थावह केवल राज करने का जरिया बन कर रह गई है। महात्मा गांधी ने राजनीति को पवित्र बनाने की कोशिश की थी। वे अपने सीने पर गोली खाने तक राजनीति में ही नहीं प्रत्येक मानव के जीवन में सत्य और अहिंसा की मर्यादा स्थापित करने में लगे रहे। उनके बाद किसी ने उस तरफ नहीं देखा। लोकतान्त्रिक व्यवस्था के केंद्र में मनुष्य होता है। सारी व्यवस्थाएँ उसकी उन्नति और बहदुदी के लिए होती हैं। मगर आजादी का यह दिवस ऐसी लोकतान्त्रिक मर्यादाओं को तिरोहित होता देख रहा है।

स्वतंत्रता दिवस के मौके पर याद आता है 25 नवंबर 1949 को संविधान सभा में दिया गया डॉ. भीमराव आंबेडकर का भाषण। उन्होंने कहा था: अगर हम लोकतंत्र को सिर्फ दिखावे में ही नही, बल्कि वास्तव में भी बनाए रखना चाहते हैं, तो हमें अपने सामाजिक और आर्थिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए संवैधानिक तरीकों को अपनाना चाहिए... इसका मतलब है कि हमें संविधान अन्वया, असहयोग और सत्याग्रह के तरीकों को छोड़ देना चाहिए... ये तरीके अराजकता के व्याकरण के अलावा और कुछ नहीं हैं और जितनी जल्दी उन्हें छोड़ दिया जाए, हमारे लिए उतना ही बेहतर है। उन्होंने दूसरी बात कही कि "अपनी स्वतंत्रता को किसी महान व्यक्ति के चरणों में न समर्पित करें, या उसे ऐसी शक्तियों में न सौंपें जो उसे उनकी संस्थाओं को नष्ट करने में सक्षम बनाती हैं..." यह सावधानी भारत के मामले में ... कई अधिक आवश्यक है क्योंकि यहां भक्ति या जिसे भक्ति का मार्ग या नायक-पूजा कहा जा सकता है, उसकी राजनीति में ... भूमिका नहीं अधिक है। धर्म में भक्ति आत्मा की मुक्ति का मार्ग हो सकती है, लेकिन राजनीति में भक्ति या नायक-पूजा निश्चित रूप से पतन और अंततः तानाशाही का मार्ग होती है। उन्होंने यह भी कहा कि हमें केवल राजनीतिक लोकतंत्र से संतुष्ट नहीं होना है बल्कि हमें अपने राजनीतिक लोकतंत्र को सामाजिक लोकतंत्र भी बनाना चाहिए। राजनीतिक लोकतंत्र तब तक नहीं टिक सकता जब तक उसके आधार में सामाजिक लोकतंत्र न हो। सामाजिक लोकतंत्र का अर्थ उन्होंने बताया कि एक ऐसी जीवन पद्धति जो स्वतंत्रता, समानता और बहुध्वज को जीवन के सिद्धांतों के रूप में मान्यता दे। आजादी के इस दिवस पर हम पाते हैं कि महात्मा गांधी और आंबेडकर की विरासत लेकर चलने का दावा करने के बावजूद यह देश ऐसा नहीं कर सका है। लोकतंत्र के सिद्धांतों में सामूहिकता पहली शर्त होती है जिसमें अल्पमत को सम्मान देने की मर्यादा होती है। मगर अब निर्वाचित प्रतिनिधि चाहे वे किसी भी वैचारिक रंग के हों में के अहंकार में बात करते हैं, सामूहिक हम को भाषा में नहीं। कौंसिल अनाड़ी बात है कि आंबेडकर ने जो बात 1949 में संविधान सभा में कही उस पर लोकतंत्र के इन 80 वर्षों में केवल, एक छोटे काल खंड में उभरी,

एक राजनैतिक पार्टी ने अमल करने की इमानदार कोशिश की। वह थी स्वतंत्र पार्टी। सत्ताका कांग्रेस पार्टी के सामने एक गैर-वामपंथी विपक्ष खड़ा करने के लिए 1959 में इस पार्टी का गठन किया गया था। इसके दो प्रमुख नेताओं सी. राजगोपालाचारी, जो राजाजी के नाम से अधिक जाने जाते हैं, और मीनू मसानी ने इस पार्टी के जरिए पहली बार देश में कांग्रेस के व्यावहारिक विकल्प का रोडमैप बनाया। दोनों नेताओं के बीच जबरदस्त तालमेल था। दश में से नौ मौकों पर घटनाओं की उनकी व्याख्या एक समूह और उनकी बनाई नीतियों और रणनीतियों से उनकी पार्टी को जबरदस्त सुरुआती सफलता मिली। राजाजी अपनी पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी और पार्टी कार्यकर्ताओं की बैठकों में दोहराते रहते थे कि "हमें सत्ता के पीछे नहीं भागना चाहिए, सत्ता को हमारा पीछा करना चाहिए।" लोगों को शिक्षित करके सत्ता की तलाश करने को उन्होंने पार्टी का उद्देश्य बताया। ट्रेड यूनियनों को मोर्चों के रूप में चलाने की कोशिश नहीं करना और न ही छात्र संघों में हस्तक्षेप करना इस पार्टी की नीति थी। उसका मानना था कि क्योंकि ट्रेड यूनियनों को श्रमिकों के हितों की देखभाल के लिए बनाया गया है और राजनीतिक दलों द्वारा इनका शोषण नहीं किया जाना चाहिए। इसी प्रकार छात्रों को राजनीति में आने से पहले अपनी पढाई पूरी करनी चाहिए। संसद और राज्य विधानसभाओं और परिषदों में पार्टी के निर्वाचित विधायकों को वॉक-आउट करने की अनुमति यह पार्टी नहीं देती थी। अपने 15 वर्षों के अस्तित्व के दौरान, पार्टी के संसदों ने केवल एक बार लोकसभा में वॉकआउट किया और वह भी तब जब संविधान के 17वें संशोधन पर बहस हुई थी जिसमें किसानों की जमीन के अधिग्रहण की व्यवस्था थी और पार्टी के प्रस्ताव पर अध्यक्ष द्वारा दिया गया निर्णय उन्हें स्पष्ट रूप से अनुचित लगा। एक बार तो ऐसा अवसर भी आया जब पार्टी के विधायक आंध्र विधानसभा से बहिर्गमन कर सदन के बाहर प्रदर्शन करने लगे तो पार्टी के केंद्रीय संसदीय बोर्ड ने ऐसा करने वाले विधायकों के समूह के नेता, जो राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य भी थे, को ताड़ना देते हुए ऐसा दोबारा ऐसा न करने की चेतावनी दी। उस संसदीय बोर्ड ने अपना यह निर्णय दर्ज किया: जब विधानसभा का सत्र चल रहा हो, तब स्वतंत्र पार्टी के सभी विधायकों को विधानसभा के अंदर होना चाहिए, न कि बाहर। उन्हें बाहर खड़े होकर विरोध करने के लिए नहीं चुना गया है। वे सदन में रहने के लिए चुने गए हैं और अगर चर्चा के तहत मुद्दे पर पार्टी की स्थिति विरोध की है तो उसे वहां दर्ज कराते हैं।

स्वतंत्र पार्टी विरोध के लिए प्रविष्ट करने में विश्वास नहीं रखती थी। उसका मानना था कि ऐसे मौके भी आ सकते हैं जब पार्टी को एक सरकारी प्रस्ताव का समर्थन करना पड़े, यदि यह राष्ट्रीय हित में हो और भले ही इसका मतलब विपक्ष में अन्य दलों के साथ रैक तोड़ना हो। एक अवसर पर श्रीमती इंदिरा गांधी के नेतृत्व वाली कांग्रेस पार्टी ने संप्रभु के अवमूल्यन के लिए विपक्षी दलों का समर्थन मांगा। अर्थव्यवस्था बुरी तरह से संकट में थी और विदेशी व्यापार के अधिक होने से बड़े पैमाने पर मार पड़ रही थी। पार्टी ने कांग्रेस का समर्थन करने का फैसला किया, भले ही अन्य विपक्षी दलों ने अवमूल्यन का विरोध किया और उससे नाराज हुए, लेकिन पार्टी अपनी जमीन पर डटी रही। 1962 और 1971 के बीच कई मौकों पर ऐसा भी हुआ जब पार्टी ने अविश्वास प्रस्तावों में भाग लेने से मना कर दिया। पार्टी ने यह स्पष्ट कर दिया कि अधिवास प्रस्ताव गंभीर संसदीय हथियार होता है जिसका कस से काम इस्तेमाल किया जाना चाहिए, उसे तुच्छ नहीं मानना जाना चाहिए। पार्टी में आंतरिक लोकतंत्र को स्वीकार करने और पार्टी की एकता के नाम पर अपने सदस्यों को बांधे नहीं रखने का सिद्धांत भी इस पार्टी ने दिया। उसकी नीति थी कि पार्टी विपक्ष का उपयोग इतना दमनकारी नहीं हो कि पार्टी के विधायक केवल वोटिंग मशीन बन कर रह जाएं। मगर आजाद भारत की दलीय राजनीति भटकती चली गई और लोकतान्त्रिक मूल्यों को मजबूती देने के बजाय इनके नेता सामंती व्यवहार में रस लेते हुए उसे आज ऐसे मुकाम पर ला आए हैं जहां सभी को लोकतंत्र के भविष्य की चिंता होने लगती है।

—अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड्डा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)



राशिफल

बुधवार 14 अगस्त, 2024

सावन मास, शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत् 2081, अनुषा नाक्षत्र दिन 12:13 तक, ऐंद्रयम योग सांय 4:05 तक, कौलकरण दिन 10:24 तक, चंद्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-वृष, बुध-सिंह, गुरु-वृष, शुक-सिंह, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि योग और अमृत सिद्धि योग सूर्योदय से दिन 12:13 तक है। श्रवियोग सम्पूर्ण दिन-रात है। आज श्री हरि जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:17 तक, शुभ 10:54 से 12:31 तक, कर 3:46 से 5:24 तक, लाभ 5:24 से सूर्यास्त तक। राहुकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:02, सूर्यास्त 7:01

मेघ अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहती। आवश्यक कार्यों में विलंब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

तुला आर्थिक कारणों से अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ घन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

वृष व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

वृश्चिक मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मिथुन विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। किसी भी कारण से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा।

धनु अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। परिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है। अनवरत धन खर्च होगा।

कर्क परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्त्वपूर्ण कार्यों के संबंध में सोच-विचार हो सकता है और उचित परामर्श मिल सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ घन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ बनी रहेगी।

सिंह घर-परिवार के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी और मन में असंतोष बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्त्वपूर्ण कार्यों योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या आर्थिक/वित्तीय मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। अटका हुआ घन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होगा।

मीन नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आशावादन प्राप्त होगा। अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। धार्मिक स्थानों की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

कार्बन उत्सर्जन : दुनिया खतरे में है



अविनाश जोशी

कार्बन व्यापार में चीन, अमेरिका, रूस, जर्मनी, दक्षिण कोरिया बड़े नियंत्रित हैं। इन देशों में जिन कंपनियों का कार्बन उत्सर्जन देश के सालाना कार्बन उत्सर्जन का साठ फीसद से ज्यादा है, वे अपने उत्सर्जन की भरपाई 'कार्बन क्रेडिट' खरीद कर करना आसान मानती हैं। प्रति इकाई 'कार्बन क्रेडिट' के बाजार भाव में मांग के अनुसार उतार-चढ़ाव आता रहता है। मसलन, चीन में सरकार की कार्बन उत्सर्जन रोकने पर सख्ती की नीति के कारण उद्योग 'कार्बन क्रेडिट' खरीदने की होड़ में हैं। एक रिपोर्ट से पता चलता है कि साल 2021 में कुल कार्बन उत्सर्जन के आठ हिस्से में चीन, अमेरिका और यूरोपीय संघ के देश शामिल थे। इस मामले में भारत का योगदान महत्त्वपूर्ण साबित हो रहा है, जबकि चीन इकट्ठा फीसद कार्बन उत्सर्जन करता है जो अपने आप में सर्वाधिक है।

विश्व के सभी देशों में औद्योगिक गतिविधियों के विस्तार से ठीन हाउस गैसों का उत्सर्जन काफी तेज गति से बढ़ रहा है, जिसके कारण पृथ्वी के तापमान में निरंतर वृद्धि होती जा रही है। तापमान में होने वाली इस वृद्धि में सबसे अधिक योगदान कार्बन डाई ऑक्साइड गैस का है। जिन देशों में औद्योगिक गतिविधियाँ ज्यादा होती हैं, प्रदूषण को नियंत्रित करने के उपायों को प्रोत्साहित किया जा रहा है, जो कार्बन उत्सर्जन को कम करने में मदद

कर सकते हैं। कार्बन उत्सर्जन से यहा तापत्वं कार्बन डाइऑक्साइड, मेथेन, और अन्य प्रकार के कार्बन का वायुमंडल में उत्सर्जन से है। ये उत्सर्जन मुख्य रूप से वाहनों की ईंधन जलाने, उर्जा उत्पादन, और औद्योगिक गतिविधियों से होता है, जिसके परिणामस्वरूप वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों का स्तर बढ़ता है और जलवायु परिवर्तन के प्रमुख कारणों में से एक बनता है। मानव द्वारा किये जा रहे उत्सर्जन के कारण औद्योगिक क्रांति से लेकर अब तक पृथ्वी की सतह का औसत तापमान पहले ही 1 डिग्री सेल्सियस बढ़ चुका है और कार्बन उत्सर्जन में निरंतर वृद्धि से हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए पृथ्वी और अधिक खतरनाक जगह साबित होगी।

हम अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में छोटे-छोटे बदलाव करके कार्बन उत्सर्जन में कमी कर सकते हैं, जैसे सौर, पवन ऊर्जा के इस्तेमाल और पौधापोषण आदि से कार्बन उत्सर्जन में कमी की जा सकती है। कार्बन उत्सर्जन और अन्य ग्रीनहाउस गैसों का वातावरण में ईंधन, कच्चे तेल और कोयले के जलने से होता है। घर में बिजली के अधिक प्रयोग से और फ्लोरसेंट बल्बों के इस्तेमाल से कमी की जा सकती है। प्लास, धातुओं, प्लास्टिक और कागज को एक से अधिक बार उपयोग में ला कर भी हम कमी कर सकते हैं, इसके साथ ही निरंतर चलने वाले रफ्रिजरेटर को स्प्रीड धीमी रख कर या घर की दीवारों पर हल्के रंग का पेंट भी इसमें काफी मददगार होते हैं। वैसे तो इंडिकेटर और स्टैंडबाय मोड पर रहने वाले गैजेट्स भी कई किलो कार्बन डाइऑक्साइड उत्पन्न करते हैं। कुछ छोटी छोटी बातें एम आदते भी सहायक हो सकती हैं जैसे उचित मात्रा में कपड़े एकरा होने हैं। प्रदूषण को नियंत्रित करने के उपायों को प्रोत्साहित किया जा रहा है, जो कार्बन उत्सर्जन को कम करने में मदद

कर सकते हैं। कार्बन उत्सर्जन से यहा तापत्वं कार्बन डाइऑक्साइड, मेथेन, और अन्य प्रकार के कार्बन का वायुमंडल में उत्सर्जन से है। ये उत्सर्जन मुख्य रूप से वाहनों की ईंधन जलाने, उर्जा उत्पादन, और औद्योगिक गतिविधियों से होता है, जिसके परिणामस्वरूप वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों का स्तर बढ़ता है और जलवायु परिवर्तन के प्रमुख कारणों में से एक बनता है। मानव द्वारा किये जा रहे उत्सर्जन के कारण औद्योगिक क्रांति से लेकर अब तक पृथ्वी की सतह का औसत तापमान पहले ही 1 डिग्री सेल्सियस बढ़ चुका है और कार्बन उत्सर्जन में निरंतर वृद्धि से हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए पृथ्वी और अधिक खतरनाक जगह साबित होगी।

हम अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में छोटे-छोटे बदलाव करके कार्बन उत्सर्जन में कमी कर सकते हैं, जैसे सौर, पवन ऊर्जा के इस्तेमाल और पौधापोषण आदि से कार्बन उत्सर्जन में कमी की जा सकती है। कार्बन उत्सर्जन और अन्य ग्रीनहाउस गैसों का वातावरण में ईंधन, कच्चे तेल और कोयले के जलने से होता है। घर में बिजली के अधिक प्रयोग से और फ्लोरसेंट बल्बों के इस्तेमाल से कमी की जा सकती है। प्लास, धातुओं, प्लास्टिक और कागज को एक से अधिक बार उपयोग में ला कर भी हम कमी कर सकते हैं, इसके साथ ही निरंतर चलने वाले रफ्रिजरेटर को स्प्रीड धीमी रख कर या घर की दीवारों पर हल्के रंग का पेंट भी इसमें काफी मददगार होते हैं। वैसे तो इंडिकेटर और स्टैंडबाय मोड पर रहने वाले गैजेट्स भी कई किलो कार्बन डाइऑक्साइड उत्पन्न करते हैं। कुछ छोटी छोटी बातें एम आदते भी सहायक हो सकती हैं जैसे उचित मात्रा में कपड़े एकरा होने हैं। प्रदूषण को नियंत्रित करने के उपायों को प्रोत्साहित किया जा रहा है, जो कार्बन उत्सर्जन को कम करने में मदद

कर सकते हैं। कार्बन उत्सर्जन से यहा तापत्वं कार्बन डाइऑक्साइड, मेथेन, और अन्य प्रकार के कार्बन का वायुमंडल में उत्सर्जन से है। ये उत्सर्जन मुख्य रूप से वाहनों की ईंधन जलाने, उर्जा उत्पादन, और औद्योगिक गतिविधियों से होता है, जिसके परिणामस्वरूप वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों का स्तर बढ़ता है और जलवायु परिवर्तन के प्रमुख कारणों में से एक बनता है। मानव द्वारा किये जा रहे उत्सर्जन के कारण औद्योगिक क्रांति से लेकर अब तक पृथ्वी की सतह का औसत तापमान पहले ही 1 डिग्री सेल्सियस बढ़ चुका है और कार्बन उत्सर्जन में निरंतर वृद्धि से हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए पृथ्वी और अधिक खतरनाक जगह साबित होगी।

हम अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में छोटे-छोटे बदलाव करके कार्बन उत्सर्जन में कमी कर सकते हैं, जैसे सौर, पवन ऊर्जा के इस्तेमाल और पौधापोषण आदि से कार्बन उत्सर्जन में कमी की जा सकती है। कार्बन उत्सर्जन और अन्य ग्रीनहाउस गैसों का वातावरण में ईंधन, कच्चे तेल और कोयले के जलने से होता है। घर में बिजली के अधिक प्रयोग से और फ्लोरसेंट बल्बों के इस्तेमाल से कमी की जा सकती है। प्लास, धातुओं, प्लास्टिक और कागज को एक से अधिक बार उपयोग में ला कर भी हम कमी कर सकते हैं, इसके साथ ही निरंतर चलने वाले रफ्रिजरेटर को स्प्रीड धीमी रख कर या घर की दीवारों पर हल्के रंग का पेंट भी इसमें काफी मददगार होते हैं। वैसे तो इंडिकेटर और स्टैंडबाय मोड पर रहने वाले गैजेट्स भी कई किलो कार्बन डाइऑक्साइड उत्पन्न करते हैं। कुछ छोटी छोटी बातें एम आदते भी सहायक हो सकती हैं जैसे उचित मात्रा में कपड़े एकरा होने हैं। प्रदूषण को नियंत्रित करने के उपायों को प्रोत्साहित किया जा रहा है, जो कार्बन उत्सर्जन को कम करने में मदद

कर सकते हैं। कार्बन उत्सर्जन से यहा तापत्वं कार्बन डाइऑक्साइड, मेथेन, और अन्य प्रकार के कार्बन का वायुमंडल में उत्सर्जन से है। ये उत्सर्जन मुख्य रूप से वाहनों की ईंधन जलाने, उर्जा उत्पादन, और औद्योगिक गतिविधियों से होता है, जिसके परिणामस्वरूप वायुमंडल में ग्रीनहाउस गैसों का स्तर बढ़ता है और जलवायु परिवर्तन के प्रमुख कारणों में से एक बनता है। मानव द्वारा किये जा रहे उत्सर्जन के कारण औद्योगिक क्रांति से लेकर अब तक पृथ्वी की सतह का औसत तापमान पहले ही 1 डिग्री सेल्सियस बढ़ चुका है और कार्बन उत्सर्जन में निरंतर वृद्धि से हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए पृथ्वी और अधिक खतरनाक जगह साबित होगी।

सकते हैं, अधिक से अधिक वृक्ष लगाने का प्रयास करें, क्योंकि एक अकेला वृक्ष अपनी जिन्दगी में एक टन कार्बन डाइऑक्साइड सोखता है, भोजन को बर्बाद करने से बचे, क्योंकि इसे तैयार करने में काफी ऊर्जा का उपयोग होता है। इस तरह हम प्रकृति एवम पर्यावरण के प्रति जागरूक समाज के निर्माण में सहायक हो सकते हैं।

दुनिया भर में जलवायु परिवर्तन और बढ़ते तापमान को लेकर लंबे समय से चिंता जताई जाती रही है। इस मामले पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन होते रहते हैं और उनमें वैश्विक स्तर पर तापमान में बढ़ोतरी के कारणों और उसके समाधान पर विचार किया जाता है। लेकिन जमीनी स्तर पर इस सबका हासिल क्या रहा है, यह छिपा नहीं है। हालात यह हैं कि तापमान में बढ़ोतरी की समस्या अब ऐसी शक्ति अखिरतार करती जा रही है, जिसमें ऐसा लगता है मानो बहुत कुछ हाथ से छूट रहा हो। पिछले कुछ समय से मौसम के अति कठोर होते जाने की वजह से तापमान के इसी उतार-चढ़ाव में छिपी है। अमेरिका के दक्षिण-पश्चिम और मैक्सिको में जानलेवा गर्म हवाएँ चल रही हैं तो यह बेवलेह नहीं है। अब अगर दुनिया के दूसरे हिस्सों में भी बढ़ते तापमान की वजह से विगड़ते हालात की खबरें आ रही हैं, तो यह एक तरह से गहराती समस्या की ही कहियाँ हैं। विडंबना यह है कि आप दिन होने वाली बैठकों में वैज्ञानिक और पर्यावरणविद जलवायु में आती विकृति के लिए कोयला, तेल और प्राकृतिक जीवाश्म ईंधन के उपयोग से जलवायु की निरंतरता में होने वाले बदलाव को जिम्मेदार ठहराते हैं। तात्कालिक स्तर पर इस मामले के हल के लिए कुछ बिंदुओं पर सहमति भी बनती है। लेकिन फिर कुछ समय बाद सब कुछ पहले की तरह चलने लगता है।

कोरोना महामारी के दौरान जब दुनिया के ज्यादातर देशों में पूर्णबंदी लगी

जालोर के सरकारी स्कूल ने प्रतिभाओं के होर्डिंग्स और पोस्टर लगाने की पहल की

रेवत ग्राम के विद्यालय में विविध क्षेत्र की प्रतिभाओं का भी परिचय दिया है

जालोर, (कास)। प्रदेश में नामी-गिरामी शिक्षण संस्थानों के बीच जहाँ हर वर्ष नए शैक्षणिक सत्र में एडमिशन के लिए लुत्तापने के लिए उच्च प्राप्तांकों वाली मार्कशीट को दर्शाते होर्डिंग-पोस्टर का वार दिखाई देता है, वहीं जालोर के एक सरकारी स्कूल ने बच्चों पर प्राप्तांकों के मानसिक तनाव को कम करने वाली अभिनव पहल की है जो अभिभावकों और शिक्षा क्षेत्र में बहुत सराही जा रही है। असल में प्रतिभाएं आमतौर पर सिर्फ प्राप्तांकों (प्रतिशत) के आधार पर ही तय होती है, लेकिन जालोर जिले के रेवत ग्राम स्थित इस विद्यालय में प्राप्तांकों के अलावा विविध क्षेत्र की अपनी प्रतिभाओं का भी परिचय दिया है। नतीजे इस स्कूल की भी बहुत अच्छे हैं लेकिन साथ-साथ विद्यालय ने अपने प्रवेशोत्सव पोस्टर नृत्य प्रतिभाएं, खेल प्रतिभाएं,

विद्यालय की इस पहल को अभिभावकों और शिक्षकों सहित राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के शिक्षाविदों ने अनुकरणीय बताया है

सुंदर लेखन प्रतिभाएं, चित्रकला प्रतिभाएं, गायन कला प्रतिभा, सिलाई कला प्रतिभा, काव्य प्रतिभा और कापट प्रतिभा के अलावा सोशल मीडिया प्रतिभा तक का परिचय दिया है। इस सरकारी विद्यालय ने श्रेष्ठ अंकों वाले विद्यार्थियों के साथ ही विभिन्न बहुआयामी प्रतिभाओं के होर्डिंग और पोस्टर लगाकर नई मार्कशीटिंग और ब्राइंडिंग करने की पहल की है, जिसमें अंकों की मेरिट के साथ ही स्पोर्ट्स, ड्रास, सिंगिंग, पेंटिंग, बेस्ट राइटिंग, पॉइम्स, स्पीच आदि गतिविधियों को भी शामिल कर विविध टैलेंटेट प्रतिभाओं के

होर्डिंग्स और पोस्टर लगवाकर सर्वांगीण विकास का मैसेज दिया है। विद्यालय के प्राचार्य छानुपुरी गोस्वामी ने बताया कि व्याख्याता संदीप जोशी ने सभी शिक्षकों के साथ मिलकर रेवत स्कूल में यह नई पहल की है। शिक्षक जोशी के मुताबिक कोचिंग एवं ट्यूशन के दबाव, अंकों की जानलेवा प्रतिस्पर्धा, सफलता का प्रेशर और असफलता का डर आदि से बचने और अभिभावक भारी तनाव में जी रहे हैं। परीक्षा में अंक प्राप्त करने की होड़ के समानांतर पीक लाइन बहुआयामी प्रतिभाओं की भी खड़ी करनी होगी। ज्यादा अच्छा है कि यह दूसरी लाइन और भी बड़ी

हो। रेवत के सरकारी स्कूल ने इस दिशा में एक कदम बढ़ाया है, समस्या से समाधान की ओर। इस बार प्रवेश उत्सव के दौरान 12वीं बोर्ड कक्षा में सर्वोच्च 95.20 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाली विद्यार्थी के साथ-साथ विद्यालय की अन्य विभिन्न प्रकार की प्रतिभाओं के भी चित्र होर्डिंग्स, पोस्टर इत्यादि पर लगाए हैं। जिनमें खेल प्रतिभा, पेंटिंग प्रतिभा, नृत्य प्रतिभा, सुंदर हैंड राइटिंग वाले विद्यार्थी, अच्छा क्राफ्ट करने वाले विद्यार्थी, गायन प्रतिभा, सुंदर कविता पाठ करने वाले विद्यार्थी भी नाम और फोटो प्रकाशित किए हैं। विद्यालय की इस पहल की अभिभावकों और शिक्षकों द्वारा सराहना हुई है, साथ ही राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के शिक्षाविदों ने भी इस पहल को अत्यंत महत्वपूर्ण एवं

अनुकरणीय बताया है। एनसीईआरटी के संयुक्त निदेशक प्रो. श्रीधर श्रीवास्तव ने विद्यालय को शुभकामनाएं देते हुए लिखा कि यह बहुत सुंदर विचार है। हर तरह की प्रतिभाओं को स्थान एवं सम्मान मिलना चाहिए। यह हृदयक 2.0.2. के प्रथम सिद्धांत का परिपलना है। विद्यालय को बधाई।

इसी प्रकार एनसीईआरटी के पूर्व निदेशक प्रोफेसर जेएस राजतुत, विख्यात प्रबंध गुरु एन.रघुरामन, देव संस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार से जुड़े गुजरात निवासी एवं वर्तमान में अमेरिका निवासी शिक्षाविद् चेताराम जोशी सहित अनेक शिक्षाविदों, प्रशासनिक अधिकारियों ने इस पहल की सराहना की है। अमरीका में कार्यरत भारतीय मूल के वैज्ञानिक डॉ. तेज पारीक ने विद्यालय के इस नवाचार की प्रशंसा की है।

डिग्गी कल्याणजी का लकखी मेला परवान पर, तीसरे दिन उमड़े श्रद्धालु

मालपुरा, (निर्स)। तीर्थ स्थल डिग्गी में चल रहे डिग्गी कल्याण महाराज का 59वां लकखी मेला तीसरे दिन मंगलवार को परवान पर रहा। भगवान विष्णु के स्वरूप कल्याणधणी की मनमोहक झांकी के दर्शन कर चरणों में शीश झुकाने के लिये कल्याण भक्त अनवरत डिग्गी की ओर बढ़ रहे हैं। कल्याण भक्तों की सेवा-चाकरी की लोगों में होड़ सी मची हुई है। जयपुर रोड बजरी नांके के पास लगे श्रीजी भंडारा व डिग्गी मोड़ से आगे लगे श्याम मित्र मंडल के भंडारे में अपनी सेवाएं दे रहे सेवक पदयात्रियों में कल्याणधणी का वास मानकर उनके चरण धोने व भंडारे में तैयार किये गये कई प्रकार के व्यंजन भक्तों को परोसकर स्वयं को श्रीजी के समीप होने का अहसास कर रहे हैं। डिग्गी तीर्थ की ओर आने वाले छोटे से बड़े हर



डिग्गी लकखी मेले में श्रीजी के दर्शन के लिये आस्था का सैलाब उमड़ा।

एक मार्ग पर श्रीजी भक्तों की टोलियां कल्याणधणी के जयकरों लगाते हुये हाथों में केसरिया ध्वज लिये केसरिया कल्याण मान भूल मत जायें सा, उंची पेड़ी कलां धणी की मोसु चढ़ चो न उतरयो जाके एकी मारा कलाधणी ने मारो हाथ पकड़ ले जाये, जैसे भजनो पर नाचते-गाते शुभते श्रीजी भक्त डिग्गी की

ओर बढ़ रहे हैं। छोटी-छोटी पर्गडिंधियों पर लगी भक्तों की लक्ष्मी करारें दूर से ही भक्तों को अपनी ओर आकर्षित कर रही हैं। कई शारीरिक कष्टों से छुटकारा पाने की मन में अरदास लिये श्रद्धालु शय में श्रीकल लेकर कनक दण्डवत करते श्रीजी के दरबार में पहुंच रहे हैं। 11 अगस्त को जयपुर से रवाना हुई लकखी

पदयात्रा के साथ ही शुरू हुआ मेले के आज तीसरे दिन मंगलवार को डिग्गी पहुंचे कल्याण भक्तों का आंकड़ा एक लाख की संख्या को पार कर गया। यात्रा मार्ग में जगह-जगह लगे भंडारों के अतिरिक्त पदयात्रियों की सेवा के लिये सेवादार दूर-दराज से पहुंचे डिग्गी पहुंचे भक्तों को केला, सेव, काजू, वनस्पति सहित नौवू, सिंकनी ईत्यादि पुराने सेवा में जुटे हुये हैं। प्रदेश भर से डिग्गी गाम के लिये रवाना हुई पदयात्राएं डिग्गी पहुंचने का क्रम लगातार बढ़ रहा

है। श्रीजी भक्तों की सुरक्षा के लिये मंदिर ट्रस्ट की ओर से चौपड़ चौराहे से महिला व पुरुष की अलग-अलग रैलिंग लाई गई है तो सात सौ से अधिक पुलिस के अधिकारी व जवान चौपड़े-चौपड़े पर तैनात हैं। ठोंक व वैशाली डीपी की ओर से दर्शनों के पश्चात कल्याण भक्तों को गंतव्य स्थान पर पहुंचाने के लिये अतिरिक्त बसें लगाकर यात्रियों को किराये में 50 प्रतिशत की छूट दी जा रही है। एसडीएम कपिल शर्मा, तहसीलदार राहुल पारीक, एएसपी रामकुमार कत्या, डीएसपी महेश्वर मीणा, विकास अधिकारी सतपाल कुमावत, डिग्गी थानाधिकारी कप्तान सिंह, मला कन्ट्रोलर रुम से मेला व्यवस्थाओं की निगरानी कर रहे हैं। चिकित्सा विभाग की टीमों तो एनसीसी व स्काउट कैडेट्स मेले में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।



राशिफल

बुधवार 14 अगस्त, 2024

सावन मास, शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत् 2081, अनुषा नाक्षत्र दिन 12:13 तक, ऐंद्रयम योग सांय 4:05 तक, कौलकरण दिन 10:24 तक, चंद्रमा आज वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-वृष, बुध-सिंह, गुरु-वृष, शुक-सिंह, शनि-कुम्भ